Poorest Areas Civil Society (PACS) Programme
Case study template

कर्तव्य व निष्ठा से लौटी मुस्कान

मेरा नाम अनिल सदाय है। मेरे पिताजी का नाम–स्व0 विदु सदाय है। मेरी उम्र–36 वर्ष की है। मैं प्राथमिक विद्यालय जानकी नगर, द्वालख का षिक्षक हूॅ। मेरा घर द्वालख पंचायत के जानकी नगर टोला में है। यह पंचायत कोषी बॉध के बीच में अवस्थित है। इस पंचायत की कुल जनसंख्या 6920 है। कुल परिवार 1497 है, जिसमें बीपीएल परिवार 1026 और अनुसूचित जाति जनसंख्या 2875 है। इस पंचायत के पुरब में कोषी नदी और पष्चिम में कोषी और भुतही बलान बहती है। इस पंचायत में सामाजिक चेतना केन्द्र, खैरी, मधेपुर, मधुबनी द्वारा लगभग छः महीने से पैक्स परियोजना के तहत मुख्य रुप से षिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य किया जा रहा है। इसी के तहत मेरे गॉव में एक समुदाय आधारित संगठन का निर्माण किया गया जिसका नाम दलित विकास मंच जानकी नगर है जिसमें मैं भी एक सदस्य हूॅ। मैंने अपने स्तर से समुदाय आधारित संगठन/सीबीओ के सदस्यों के साथ प्राथमिक वि0 जानकी नगर में षिक्षक एवं अभिभावक के साथ आनन्ददायी षिक्षा हेतु एक मिटिंग का आयोजन किया, जिसमें षिक्षा के विभिन्न पहलुओं जैसे नियमित मध्याहन भोजन, भोजन की गुणवता, भेदभाव, छिजित बच्चों को स्कूल से जोड़ना और नये नामांकन आदि विषय पर विस्तार से चर्चा की गई। चर्चा के बाद अभिभावकों एवं षिक्षकों में उतनी संवेदना नहीं आई ताकि उपरोक्त मुद्दों पर विस्तार से काम किया जा सके। मैं बेचैन सा हो गया। रात में नींद नहीं आती थी। मैं परेषान रहने लगा। मेरे दिमाग में एक अजीव सी भावना उत्पन्न हुई और मैं अपने मन में उसी वक्त संकल्प लिया कि जितने छिजित बच्चे और नये नामांकन करने योग्य बच्चे हैं उनको मैं स्कूल से अवष्य जोडूॅगा। सरकार द्वारा मघ्याहन भोजन की उपलब्धता, मात्रा, गुणवता, आदि के लिए मैं जी जान लगा दूंगा। और मैंने वैसा ही किया। सर्वप्रथम दरवाजे दरवाजे जाकर बच्चों को पुनः चिन्हित किया। बराबर उनके अभिभावक से संपर्क करना शुरू किया। जो अभिभावक मेरी बात नहीं मानते थे तबतक मैं उनके यहां जाता रहा जबतक वे अपने बच्चे को स्कूज भेजने कि लिए हां नहीं कर दी। इस कार्य को करने के लिए हमें अभिभावकों के नखरे सहने पड़े, गलत–गलत बातें सुननी पड़ी। यहां तक की उन्हें मनाने के लिए उनके कार्यों में सहयोग करना पड़ा। और आज तक मैं कुल 75 बच्चों का नामांकन स्कूल में कराया पाया हूॅ। जिसमें 42 लड़कियां और 33 लड़के शामिल हैं। साथ ही 36 छिजित बच्चों को भी पुनः स्कूल से जोड़ा हूॅ। इस काम को पूरा करने में कैडर श्री अषोक सदाय ने पूरा का सहयोग किया।

परिणामत–बच्चे स्कूल जाने लगे हैं। मेनु के आधार पर मघ्याहन भोजन नियमित मिलने लगा है। षिक्षक के बारे में कभी–कभी बच्चे हमसे षिकायत करते हैं, उस वक्त एक अलग से अनुभूति का एहसास होता है। ऐसा लगता है मानो मैं सही में उनका अभिभावक हूं।

प्रेरणा– कोई भी कार्य कठिन नहीं होता है यदि हम उसे अपना कर्तव्य एवं जिम्मेवारी समझ कर करें तो। आदमी अधिक कार्यों से नहीं थकता बल्कि अनियमित कार्य करने से थकता है।